कपास उत्पादक किसान फसल की नियमित निगरानी करें, कीट एवं रोग प्रबंधन अपनाएं: कृषि विज्ञान केंद्र

संगरिया, कृषि विज्ञान केंद्र, हनुमानगढ़-प्रथम (संगरिया) के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख ने जिले के कपास उत्पादक किसानों को जुलाई माह के दूसरे पखवाड़े के लिए आवश्यक कृषि सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों ने बताया कि जिन क्षेत्रों में अभी तक पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है तथा कपास की फसल लगभग दो माह की हो चुकी है, वहां फूल दिखाई देना प्रारम्भ हो सकता है तथा बढ़वार अपेक्षाकृत कम रह सकती है। किसानों को घबराने की आवश्यकता नहीं है। वर्षा होने के बाद फसल की बढ़वार सामान्य रूप से होने लगेगी।

वैज्ञानिकों ने सलाह दी है कि जिन खेतों में बुवाई के समय जिंक सल्फेट का प्रयोग नहीं किया गया है, वहां 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट का दो बार पर्णीय छिड़काव पुष्पन एवं टिंडा विकास अवस्था पर अवश्य करें।

जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स, हरा तेला, सफेद मक्खी, गुलाबी सुंडी तथा जड़ गलन रोग का प्रकोप बढ़ने की संभावना रहती है। इसलिए किसान प्रतिदिन खेत का निरीक्षण करें। 60 दिन से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स की आर्थिक क्षति स्तर (30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिलने) पर पहले नीम आधारित कीटनाशी का प्रयोग करें।

वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि सफेद मक्खी की संख्या 6–8 वयस्क प्रति पत्ता अथवा हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी अथवा डाइनोटेफ्यूरान 20 एसजी का अनुशंसित मात्रा में छिड़काव करें।

गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए प्रति एकड़ दो फेरोमोन ट्रैप लगाने की सलाह दी गई है। यदि लगातार तीन दिनों तक प्रत्येक ट्रैप में 5–8 नर पतंगे मिलें अथवा फूलों में 10 प्रतिशत तक प्रकोप दिखाई दे तो अनुशंसित कीटनाशकों का छिड़काव करें।

जड़ गलन रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों की जड़ों में कार्बेन्डाजिम का घोल डालने तथा पूरी तरह सूख चुके पौधों को उखाड़कर नष्ट करने की सलाह दी गई है। साथ ही पत्ती मरोड़ रोग से ग्रसित पौधों को भी खेत से हटाने की अपील की गई है, ताकि रोग का प्रसार रोका जा सके।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने किसानों से आग्रह किया है कि वे फसल की नियमित निगरानी करते रहें तथा किसी भी समस्या की स्थिति में कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विश्वविद्यालय अथवा कृषि विभाग के विशेषज्ञों से संपर्क कर वैज्ञानिक सलाह प्राप्त करें।

डॉ. अनूप कुमार

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख